

DPN6465

१. गोविवाहा विधि
२. प्रेतशास्त्र विधि

GO VIVĀHA VIDHI
PRETA ŚRADDHA VIDHI

Title :

Run. No. 7190

Cat. No. ३अन २२

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

नेपालभाषा निर्देशक मन्त्र
Newa direction

Size in cms. 15.5 X 6.5

Folios 26 Lines (in a page)

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

भीमसेन / ३अन अल्सप

Date: NS / SS / VS / KS ८५३

Ruler / place

Bhimsean Jan Alsep

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ गोविवाहा विधि वक्ष्ये ॥ जिम निन्दु कुन्दु म्मेजलुम. रचलिन (सकले डः) ॥
वैश्वदेव सकलके ॥ आदि कुण्ड ५५१ कलाश बोम ॥

समाप्ति नाम्न / post colophon

इति गोविंदविहारी विविध लक्षणं ॥ ॥ ओषे धुनडाव खादि लपने ॥ ॥ धुनं ॥

सं ८५३ नख आषाढ चादि दद्यामि धुनु धंनुया श्रीसीमलेनन चोया जुते ॥ नख आषाढ
धुनुया पेचमी मोळवत खं कुरु श्री गणेशाय नमः ॥ धुनं ॥ श्री गणेशाय
नमः ॥

सं ८५३ पौष धुनुया चतुर्दशी चान्हस . गाडकाहाया अनन्तानाड उपाध्या मृदु ॥ ॥

श्री कृष्ण ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

आदि वाक्य / Beginning

अथ जेत आदि विविध वक्ष्ये ॥

समाप्ति / Ending

इति नृ पक्षमा विवक्षे ।

5

विष्णु	विष्णु	उन्मा	आमा
सिक	य	मासि	विष्णु
षष्ठ	पञ्च	वर्ग	तुली
	म	थ	य
नव	अष्ट	सफ	उन्मा
म	म	म	मासि
अष्ट	उना	प्रका	दश
मासि	विष्णु	दश	न

0

cmts.

5

10

15

ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ एतन्निवाहादिभिर्वक्त्र ॥ किमिति ह्यकुसुमा ल
 ह्युय खलितसकल ॥ वचि संसकल ॥ अग्नि कुमुदका क
 लन वाय ॥ वक्त्र अक्षकल ग नादा धानन ॥ नति वन गव ॥
 ७३८ ॥ यक यक नीता गय श्रीन श्री वकि हा यान वलि अदित
 सक नगी यूव सन साय ॥ सुगु गय स थं हा वर गु थन न ॥ य
 रूप युय या र्थं कुति संकु ग स य व ग य सा धन या य ॥ न क सं वा म
 लान ॥ ॐ श्री मादि ॥ यक मा व स विगु नृद ग एत विवाहा इ न य

यग य सा धन निमित्तार्थ ॥ वाक् ॥ या सा च वा ग य क आ ल य
 जति ॥ ॥ वलि विय ॥ ॐ ग य ना ला ॥ ॐ अ म्ब शु मि क ॥ ॐ य स
 ना ना ॥ ॐ सर्व लो क ग य ग य व लि ग क र खा हा ॥ ॥ या सा न व लि य
 स क नी ॥ ॥ अ न स य य ॥ ॥ ग य य व न य सा ध न ॥ ॐ ग य य मि ॥
 लं ख न हा य ॥ ॐ द धि उ मा य नि द व ग य न म ॥ ॐ द धि क्रा य ॥ ग
 य य ॥ ॥ अ म्ब व कि दे व ग य २० ॥ ॐ सा म द व ग य २४ ॥ ॐ य य ४ य
 थि यी ॥ ॐ ए ल न द व ग य २४ ॥ ॐ ग य मि ॥ ॐ नि वा य २१ ॥ ॐ न म ४
 ल व य य ॥ ॐ नि य न म ४ ॥ ॐ य ४ ह न नी ॥ ॐ ज ना द न द व ग य २

ॐ मधुदाय ॥ ॐ अस्माकं वनं नंदवनाय ॥ ॐ नन्दादेवी ॥ म ॥ ॐ वृक्ष ॥ न ॥
१ ॥ ॐ वृक्ष यज्ञानं ॥ मय्यां रुचय नक्षत्र १० ॥ पत्रनिष्ठा दधुसमन ॥ व
दधव २ युनि ॥ तात ॥ ॐ समया मि ॥ ॐ जनयत्येता ॥ दन्तादिपुत्रय
॥ ॥ ॐ निर्मलं काययूयाय ॥ वृक्षानतिवर्णय ॥ शुद्धं काययू
सानां विनिर्गतं वृक्ष ॥ नमः ॥ अग्रगण्य ॥ ॥ सर्वं ध्याय ॥ गिरयूकायाय
॥ दन्तादिन ॥ ॥ ॥ विमर्शनयाय ॥ दव ॥ अति यक्रमानसं ॥ ॐ उमा
नदी वगवति ॥ ॐ वायव्यं पुष्पमि ॥ ध्याय ॥ ॐ मनसुकायाय ॥ म
ॐ तं ॥ ॐ वम ॥ नद्य ॥ अस्मिन् ॥ ॥ क्रियाया कश्चादिनसकस्य विद्य

सखसावनधनं ॥ धर्मेयगवकायाय ॥ यक नक सदावकं ॥ धर्मेति कि
याया कश्चन धिमा नखनिष्ठा दधुसमन ॥ यरुधनदा वसं ध्या
याय ॥ क्रियायाय ॥ पुष्टं कर्ण ॥ ॐ म ॥ क्रियाय नमः ॥ वीहिस ॥ ॐ य
द्विकाय नमः ॥ ग ॥ ॥ ॐ सर्वं उतिष्ठदा ॥ ॐ वृक्ष ॥ नमः ॥ ॐ वृक्ष यज्ञान
नं ॥ वीहिस ॥ ॐ वीहय ध्याय ॥ ग ॥ ॥ ॐ सर्वं उतिष्ठदा ॥ ॥ सर्व
पात्रसवत नदीदा व ॥ मय्यां विमर्शनयाय ॥ ॐ वायव्यं पुष्पमि ॥ ॐ वायव्यं पुष्पमि ॥
नय ॥ तात ॥ दधुसमन ॥ ॥ क ॥ नय ॥ तात ॥ ॥
॥ मय्यां विमर्शनयाय ॥ ॐ तमः ॥ नदीदा व ॥ ॥ धर्मेति नय ॥ क ॥ नय

लघु कर्म या अ॥ उं ब्रह्मादि॥ पुनः सत्त्वात्तया सा र्वपात्रमुखा॥ अग्नि
 सधने॥ अर्थयदासाधने॥ नमः कृतमवने॥ उं नत्वा या मि॥ उं लमस
 श्रुतिः॥ उं भ्राता पृथ्वी॥ उं ब्रह्मात्रि मक्षि॥ उं द्वात्रादती॥ अग्निं धेनुं दे॥ उं
 युक्ता यज्ञाने॥ उं ॐ देविषु॥ उं नमः नीरवाय न॥ उं श्रया यज्ञ॥ ॥
 अष्टक नमः पूजने॥ उं श्रीं रुग॥ उं ॐ देविषु॥ उं ॐ रावणी धनमणी
 हस्तग॥ सुयवसिनामनवेद नस्या॥ अष्टक नमः सी विष्णु वगैः ॥
 अर्थय विभीषणमहिनामयुषे ॥ उं देवता नो दयसा धीमहिषा वीर्य नवध
 र्म कल्पयती दुर्द्धा गैः यज्ञं नैः सा डिक्क नती॥ स्वर्गमष्ट मां गै देवी दूय
 वदी

आत्मा निर्मादिष्टं प्रकामानिमादिष्टं ननु मसीवर्षा मृथिया ॥ उं छ
 धूनुं कवीर्षानि पुठां वं य॥ पाथिना निदिममनका सिंहे॥ या अस्वराय द
 रुत्र ॥ सप्तमं विवकुमातसु धा नमया विष्णु देवा ॥ उं दिवा वा विष्णु न
 वापथिनामहा वा विष्णु उना नै गत्रिज्ञान॥ उना हि रुद्रा वसुधा राय लसा
 प्रयक्तु दकि लका दतसेवादि प्रवत्वा ॥ उं प्रगदिषु सुवगै नयार्थे नमः ॥
 नसीमः कुवरा गिधिषा ॥ अष्टा नृषु गिषु विक्रम लस्य धिद्रि यन्निमुवता
 निदिमः ॥ उं विष्णु नता नमसि॥ ८ ॥ ॐ गिषु सुवगै नयार्थे नमः ॥ उं सय
 मरुय ॥ ॥ गृह ॥ उं शक्र ॥ १० ॥ साकया त ॥ उं ज्ञानात्र मिन्द ॥ १० ॥

10

57

कायनात वेद ताकपात ग्रह कत ॥ नामवर्तिग केये यकनीजा
 लभी तागद वेदिदात्री मादि सर्वध्याइ तिंदया ॥ घृणाइ निरुभा ॥
 ॥ ॥ घृणाइ निरुविया ॥ थं गिता इति विय ॥ ॥ नियाताम ॥ उं वनरुडा ॥
 लाहा ॥ ॥ गिताइ निरुवु ॥ ॥ यथाकर्मस ॥ ॥ धनधनदाववत्रुमा
 वाथय ॥ दतयार्ग सायार्ग दूषा दाययार्ग ॥ वत्रुमा मयाय ॥ धन ॥
 उं मगयसाहा ॥ उं वत्रुमायसाहा ॥ उं सर्वयसाहा ॥ उं यययययसाहा
 ॥ उं उग्रयसाहा ॥ उं गीरुयसाहा ॥ उं रुवायसाहा ॥ उं महादवायसा
 हा ॥ उं नीमनायसाहा ॥ ॥ नितववत्रुमा ॥ ॥ धनपूषादय ॥

सिनवागिया दाययै कुरु ॥ ॥ धाहि वत्रुमा हासु कुन सुवानेग ॥ उं
 पूषा गप ॥ धादिन पूषा वक्रुनु सर्वग ॥ पूषा वा ३० सवारु वक्रुन ॥ साहा
 उं ॥ ॥ नगि विहंति ॥ गम ॥ ॥ गप विगुयथा नास ॥ मसोव नयि ना
 कायसाहा ॥ ३ ॥ दकिमहिमुखत ॥ सक् कुमसमार्प मातदुय ॥
 धीवगयाविय ॥ ॥ धधनदावमायिहियाय ॥ वंक् नकुनसववकि
 वायाव धर्म वाहुवस रुलनिखवतासगयाव निर्मकुनयाय ॥ उं
 नकादनी ॥ वति ॥ उं मयथा वेद ॥ ॥ मगदुगावसमुननयाय ॥
 धादिगतिवितेदय गुकय ॥ उं काभुलाभुग ॥ माउस वरुति

स. क्रि. सु. स. ॥ का. त. ॥ ॐ दीर्घायुः ॥ ॥ अथ कलन नमानया वक ॥
 वंद. थव थव तुलि ॥ क. न. न. क. ल. न. य. म. ॥ व. अ. न. य. न. द. म. ॥ ॐ नमो भगवते
 ति ॥ ॥ ॐ वृषगायधर्ममूर्धनमः ॥ ॥ व. अ. न. य. न. द. म. ॥ ॐ वृषगायधर्ममूर्धनमः
 दि ॥ ॥ अ. न. य. न. द. म. ॥ ॥ मा. सा. य. न. द. म. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 पु. दि. खि. ॥ व. न. स. दू. व. क. उ. म. का. ॥ ॥ सा. या. क. व. अ. न. य. न. द. म. ॥
 क. या. स. व. न. न. ॥ मा. सा. य. न. द. म. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 उ. ता. ल. फ. न. ॥ ॐ श. ग. र. मि. न. ॥ स. गु. ल. न. न. द. म. ॥ ॐ द. धि. का. य. ॥ ॥ पु. उ.
 खि. का. द. व. श. क. ति. वि. य. ॥ ॐ ह. स्वा. हा. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥

हा ॥ ॐ वृ. दी. वि. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥
 स. वे. ल. ग. न. द. ल. न. य. व. न. म. दू. य. ॥ धू. य. दी. य. सु. द. म. य. नि. य. ति. का. ॥
 ॐ वृ. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥
 या ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥
 इ. दि. ना. उ. ता. द. दा. मि. वृ. ष. क. वि. द. ॥ ॥ मा. सा. य. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 आ. अ. न. य. वृ. ष. य. रु. था. ॥ मो. दि. ग्री. व. स. म. रु. य. द. दा. ति. उ. क. ना. सु. अ. ॥ ॥
 क. ना. ति. उ. क. ना. सु. अ. ॥ ॥ क. ना. दा. त. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥
 य. न. मा. न. य. म. म. क. ना. म. ति. उ. क. ना. सु. अ. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥ ॐ व. ॥

या २

取直之

四

॥५॥

तं न नासकं न ग्रीवम् सदा ह्यववतासयि । वयावतमा आसिधर्मे ४ ॥
 वृषहा रीगवात ॥ उ वमाद काड्यवजं घनका कुी ७ कुगात १ स वृषा ४ स
 वसा । कात्र यम्वतुसुखं वयकु नाता वययादिरुयतिमुका ॥ उ न मा
 लाय ४ जाता मनीय ४ सात्र ययाय प्रवव । नमावमसुख ४ पविप्रय ४ य
 विप्रीणानमातम ४ ॥ अशिसिं वत ॥ उ न यवात प्रतिया ददाति तं न
 क्रिदकिध्रयथाययेन ४ ॥ मउतका ॥ उ वृषा । दहगवा यम्वदुषा
 दप्रकीर्णता । वृषामिगमहं रुका । सदावकुसुसर्वदा ॥ अगमभादि ॥
 ॥ सायाद्रुसयागता ४ वलं वतहाय ॥ उ सासु अगमसुयात्रिवादि वि

सि ययावा द वासुयात्रवागो ४ नृवनादि हिवाक्री ४ ॥ उ नखायामि ॥
 ॥ अशिसिं वत ॥ सायागद्रुसर्वगनप्रिय ॥ उ सवर्कसादा ॥ उ सवर्क
 कुसादा ॥ उ सवर्कसादा ॥ उ सवर्कसादा ॥ ॥ सायागद्रुसर्वगनप्रिय
 लाविय ॥ निग्रवविय ॥ साववृत्तक ॥ उ यति वाददाति ॥ ॥ गुणुचिध
 ने ॥ उ ससुदासिनयसा ॥ ॥ यनसफयथक्षय ॥ उ यनदसाविप्रय
 यवकमहिमानेवात्रा ॥ प्रकयदि दियदि रुपादि वरुयादि पंचम
 यष्टि । सवर्कसादा । सफयदि सर्वमाती पथता ४ सादा ॥ ॥ उरुवादि
 ॥ कुगहासलजादा वदकिनका ४ ल अयथपकावासा ४ य ॥ साय

सावर्कमं क्रियागदकावका ठालसाथन ॥ वेगवनी सैधन ॥ उं यमदा
 रमदावाव वा वा वेगवनीनदी ॥ गुरुकामययवुके पुगमा कृदितगग
 ॥ गमयाउनतेली धूमडाया नामदानदी ॥ गुरुकामययवुके यमम
 कृदितगगा ॥ अमकस्ययवगमनपुफपुवधादान नार्थकामनया
 (ममिधनमसुधे) ॥ वाक ॥ उं यममकिकामनया गावडासावनी
 सैधना गतकालवर्षसुर्वलाक सैधना काम ॥ देवधरवदिकोवेग
 वनीनदीनार्थ गमावेगवनीनदीवम ॥ ॥ थरुधनकावसाधुय
 ॥ ॥ थरुधनकावसाधुय गमावेगवनीनदीवम ॥ ॥ थरुधनकावसाधुय

कम्पकाय ॥ क्रियायाकमनितिय ॥ सविसावनधनक ॥ उं नमश्य
 धूमयवपुमदायव ॥ धर्मवकाकलैविषु धूमयवमहवत्राक
 कमायगवनीदवा यानमगद्विधायग ॥ ॥ थरुधनकावयक
 लककय ॥ ॥ यकमानवधमकावय ॥ वमकलनसयादनय
 वककयगयसिधकविय ॥ जानायालक ॥ लकवातहिचक ॥ ॥
 दधुनियानवन ॥ ॥ थनसंस्थागुगिविय ॥ नमिक-पोहिक ॥
 यवकायादि धुगदीयिकाहाम वतिपुननी धायविगहाम ॥ ॥
 सैधुधुयाय ॥ ॥ सैधुधुयाय गमावेगवनीनदीवम ॥ कलनादिशगीवा ॥

वृत्तिर

यद्वाचिस्तु कृतं ॥ यत्कथयन्तु नागदीपयन्तु ॥ ॥ यत्नयन्तु मानादि
श्रुतिष्वपि कथितं ॥ नित्यं न किञ्चित् न न ॥ वन्दनं सिद्धं सगुणं कायं ॥
हं यमगं व ॥ आना वा द ॥ आन वि कृतं ॥ वदित्वा नादिस्तु आना व न
समयं काय ॥ कृतं गतिस्तु नयाय ॥ स्वत्वाया ममान् एव म कृतं विधि
य ॥ इज्जमानं हि ग्यो न न क ॥ ७ ॥ इति ॥ विवादादि विमसा के ॥ ० ॥
रायं धनं दातुं वा वि लवनं ॥ पुरी ॥ सं ६ ६ ३ त ए आना द वदित्वा न
निकृष्टं च वृथा श्री रामं न नयाया इ वा ॥ नष्ट आना द गुरुया पृथमा
मंगलं तत्वा न ध कृष्टा श्री गाना न न दृष्टा इ न कृतं ॥ ७ ॥ श्री गाना न न मः ॥

॥ सं ६ ६ ३ धोष गुरुया व दृष्टा नी दा कृतं म उवा रा
नया मून कान न दृष्टा धा म स्य ॥ ॥ श्री गाना ॥ ॥
३ श्री गाना लु न म ॥

५५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महाभक्तिः सर्वभक्तिः ॥ साधितं नमस्तुभ्यं नमो ॥
 ॐ ॥ अमृतं नागनाभं ॥ दृक्किं ॥ वसवेद्य ॥ पुनस्तान्त्रसंयुतं ॥ दातकं
 ॥ अमृतं नागनाभं ॥ यमाय धर्मनागाय ॥ मृत्युकं यातुकाय ॥ विवस्वताय कलाय
 ॥ तद्विलाकं कलाय ॥ दुदमनाय नीलाय ॥ दध्राय यत्रिधं भुक्तिं ॥ वृकाय नाय
 ॥ विगाय ॥ विरगुय ॥ नागनाभं ॥ दातकं ॥ धर्मनागाय ॥ विवस्वताय कलाय ॥ यमाय
 ॥ तद्विलाकं कलाय ॥ धर्मनागाय नागनाभं ॥ दातकं ॥ धर्मनागाय ॥ विवस्वताय कलाय ॥ यमाय
 ॥ तद्विलाकं कलाय ॥ ॥ ॥ अथ जिह्व ॥ ऊलला ॥ वृद्धं दमास नं वृद्धादी
 ॥ यतां ॥ श्रीनया ॥ वृद्धं दमास नं वृद्धादी यतां ॥ कमक्षानाया ॥ वृद्धं दमास नं ॥
 ॥ नं उत आह प्रहूजयेत् ॥ ध्यानपुष्पं त्रयादी यतां ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महाभक्तिः सर्वभक्तिः ॥ साधितं नमस्तुभ्यं नमो ॥

जिह्व कूटु किरीम ॥ काला उतन कजिपुस ॥ यकाय यत विपुस्य मू पीतं त्व
याटी यता ॥ विपुस्य ॥ याया विपुन्या विपुना कमानि मंदितया यो निदि
वनेय सु निः ॥ यूनानि टिकुता ऊल विन्दु या नि रागी यथी त्वं गी यनी पुया
नि ॥ रवकाय रव मू कूटुया ॥ द्विर्ध ॥ रथ इला ॥ द्वितीय मूला सिकाटि रसि
धो ॥ तृतीय च दूया जाटि रसि सिद्धो ॥ चतुर्थ च दूया रु लि रसि सिद्धो ॥ पंचम
मंद दिना लि लि रसि सिद्धो ॥ षष्ठम या दूटुया रु लि रसि सिद्धो ॥ सप्तम
सुगमा सहाय रसि सिद्धो ॥ अष्टम च यामा नि रसि सिद्धो ॥ नवम दू लि या सा
१ नवम र वी रसि सिद्धो ॥

दि रसि सिद्धो ॥ विपुस्य व्याय व्याय वा कूटु इला ॥ सकला उरथ ॥ ऊतन
यदुवा सन आयताय को लें ॥ रू लाल फलाय ॥ काकाय का कजि पु सुया ॥ उद
मासन त्वया टी यता ॥ मरुदं वया ऊतन ॥ धननाय धन विपु सुया ॥ उदमा
सन त्वया टी यता ॥ मरुदं वया खवस ॥ लजने सजातय का वया तव किरे
जजा गटा कि ॥ यम स्या यम दूत स्या वाय सा सि मरुमने ॥ सक ऊन्म कृती वाय
वलिंगु कूटु वाय सा ॥ काक वलि विपु सुया ॥ उत रु विपु न सी त्वया टी
यता ॥ वै वध्वन कूल जाता ॥ द्वी धन स्व ऊने ऊनी ॥ उद विपु मया यत म की

अथ निरुतिनी ॥ २

४ मं चा मृत तत्त्वान-

संयुयति विहारी ॥ ग्ना नाय ग्ना न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 निलादक विहारी ॥ काकाय काक विहारी ॥ निलादक विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ ग्ना ना
 य ग्ना न विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 की प्रस्तान ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 तयु ॥ लाजान ॥ रुलराजन ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 दं रुलय मता मूल ने यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 वायव्या यान्या ने मृत्वा वायसा ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥

३ दक्षिणा

न ॥ ॥ नमिगता वं नय मी पूगव ॥ खववु व वुं मदिवा सन र्क ॥ मधुसू नृय वन
 ददुया वि ॥ श्री धर्मना जाय न मा इ मुन मी ॥ धर्मना क स्व नृय व ॥ ग्ना न नृय प्र
 न क्रिय ॥ नन कं य न मृद्वि ॥ ग्ना न नृय न मा इ मुन ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 स थं दा व वं वि सिय ॥ की न यो न स व थं दा व वि सिय ॥ उल या न स की न यो
 रु सी ने ति ने थं दा व म्म वा क दा य क ॥ वा क ॥ य क वि लु क नृय व ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 व रु द कं त्व या दी यतां ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥
 का क विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥ यो च न क ले विहारी ॥

यादीयतां ॥ कृष्णचिंतामणिमयसंकाशयात्रा ॥ कृष्णचिंतामणिमयसंकाशयात्रा ॥
 यात्रा ॥ सोमसुखावभातद्वयक ॥ सोमसुखावभातद्वयक ॥ सोमसुखावभातद्वयक ॥ धवनि
 यात्राकायत्रकोटालचिन्तकवय ॥ अक्षयिआधय ॥ ॥ अक्षयिआधय ॥ ॥ अक्षयिआधय ॥
 (ध) तिर्थयात्रिभुधधूनकाव लखकायत्रकोटालयावस ॥ काठयत्र धवनि
 काय ॥ उदयनयात्र ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥
 धूनक ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥
 त्रिय ॥ लखकायत्रकोटालयावस ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥ अक्षयिआधय ॥

[illegible]

[illegible]

अक्षयवतीरयुक्ता रुलराऊन नैवडा धृयदीय ॥ ॐ दंरुलयुक्ता मूल
 त्यादि ॥ ॥ सोरु ॥ ॐ मसुननागनाऊऊ युजिन ॐ वसुदेवा युगकालच
 मयूअ नातकध्वननमाऽमुन ॥ अरुगवादि ॥ ॥ रवारागताविजरा लसा
 लासालायाव हासुन नुआय यथ नलनगलसधुन येसुकालाचकी
 खन ॥ रागागरुअके ॥ रथरागखन ॥ यखनकीन ॥ तिसिराय कालय
 कविद्य खठिठियायमाठरु यक कोय ॥ रथलासामिखकाव समालया
 चके ॥ यूकायाय ॥ अमुकरगमठयिकनादृग मरुवा मदीय ॐ दमासन

उत्तमिलोदक ॥ चन्दन सिंदूर यक्षायतीत यथा रुलराजन धूयतीया ॥ ६० ॥
 दंरुलययाद्यादि ॥ ~~सा~~ ॥ चालयमूरवनिलय पिरुलोकनियामिन ॥ अथ
 नायाव्यायानाना ॥ मूकयं मूयतिदिता ॥ कलायथ मयूयावि ॥ अथ मकादे
 मादिता ॥ कलियासादिमं पुर्व ॥ पुत्रकपिरुमेवय ॥ संयुधु सर्वरावाना ॥
 मर्वांगसिद्धिकात्रता ॥ तन विधुमयादह ॥ निवलोकीसगच्छति ॥ ~~अथ~~
 दि ॥ अमूरगा विविधुसुपीतावनदारवनु ॥ विधुकाठालसकोययोय
 क ॥ मातुद्रुयवा मूदीयाके मर्या ॥ अथ ॥ ~~विचकाद~~ ॥ सा ॥ ॥
 ॥ ~~अथ~~ ~~विचकाद~~ ~~सा~~ ॥ अथ ~~विचकाद~~ ~~सा~~ ॥ अथ ~~विचकाद~~ ~~सा~~ ॥

॥ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

कथनरुकोनमरव जायालसतिलोदकविद्यमालन ॥ ~~लिखत~~ ~~चावनय~~ ॥
 जाकजिमक्या ॥ नकाथयाव रुलालकस अजाक ॥ जाताय कता
 ॥ लातर्यमय ॥ १ ॥ अथ ॥ धलक सि ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 संयुधुकावयत् ॥ २ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 यं अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 विद्यता ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 स्यां तिलोदकविद्य ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 तिदिता ॥ ~~अथ~~ ~~विचकाद~~ ~~सा~~ ॥ अथ ~~विचकाद~~ ~~सा~~ ॥ अथ ~~विचकाद~~ ~~सा~~ ॥
 सार्यप्रदयसमय अथ नं पाकमिकं अथ ॥ नदीतीनवे

अथ
 विचकाद
 सा
 अथ
 विचकाद
 सा
 अथ
 विचकाद
 सा

२१ वाक्य ॥ अमुक गोत्रेति. ताम्बूल भक्षण कलशार्चन निमित्तार्थं
 धूलि जायते वायस्य ॥ ॥ अथ जिह्म निद्रया ॥ विधिरथं स्वल्प कल
 मयूजायाय ॥ गद. वलि. रम. अस. कीमती. मोलकाय च नखाय. सगु
 व ॥ ॥ अथ कर्मस. आसावकं. मलनकं ॥ अथ वृषकाय रुला विष्क
 वृषुध वमरुधेयः कषाय रुवती. यत्रि. यानमं दुद्विधीयत ॥ अंतमः
 यधुयच ॥ ग्वालनकं धूनकं ॥ आसालिकाय ॥ कलगीया. अथ मूनि
 सजोद. द्वारु लखान. कोनकाव. लठा जोन रुचकं ॥ स्थानत कुचकं
 ॥ कलगी. सिधेक विय ॥ चन्दनाया नीवोद. सगुदीरुकाया ययैकति
 यमसोनि ॥ ग्वयक मविय ॥ अथ नधियकं. मालकाया र्णविय ॥ ग्व

॥ ८ ॥
 कलगी विष्क

१ यातन विधुधय. अथ वृषयातनयाय ॥
 लयायैय कलकं य ॥ दूमा पिरवाकाय ॥ खोचय मालधकं कदना
 रथ ॥ धरुधूनकाव. आसावकं. मलनकं. धरुधूनकाव. खोचय. यि
 खासि सजोदाव. कतनकं. लीरवतनकं. धरुधूनकाव. खोचय. यि
 नाता. लईलाव वय माल ॥ धरुधूनजिम निद्रया धूना ॥ ॥ ॥
 अथ साधुन रुयि धुधय विधिः ॥ मनेधन मनीकय. वृधयतस्यानि
 कुति. चतदिन नकरुवां मुक्तिविधु विष्क मरः ॥ ॥ सोमवान. वृधवा
 न. मनेधनवा धरुधूननिगायि धुधय मरः ॥ ॥ गित सयकासनयाय. अथ
 चाग्व १ अथ मूनिद्रु. असावकं. अथ यनाया स. मलान वलनय

३ सूर्यमूर्तय कृष्णकंठनाय॥ गल्लामूर्तय कृष्ण
 मं॥ मन्त्रधरु॥ निवर्तयूजायाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय सदा मिताय
 ॐ दमस्तनं डयति विष्ठा॥ ॐ वं वासन॥ स्नान चन्दन सिन्दूर यक्षाय वी
 नयूष्य रुलराजन॥ धूपदीप॥ ॐ दं रत्नयूषाता वृलं र्यादि॥
 ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥
 ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥
 ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥
 ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥
 ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥
 ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥ ॐ कृष्णकंठनाय॥

जा॥ ॥ मूर्तयि धूपयक॥ आसनं॥ द्वितीयकलाग्रं॥ विष्ठा सनंद
 यतिविष्ठा॥ रुक्मीयकलाग्रं॥ अर्धकलाग्रं॥ यक्षसकलाग्रं॥
 यक्षसकलाग्रं॥ सफसकलाग्रं॥ मूर्तसकलाग्रं॥ नवसकला
 ग्रं॥ दमसकलाग्रं॥ उकादमकलाग्रं॥ द्वादशकलाग्रं॥ रु
 द्रादमकलाग्रं॥ मानसाशिककलाग्रं॥ दुर्गासिककलाग्रं॥
 विष्ठा सनंदयतिविष्ठा॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥
 ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥
 ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥
 ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥
 ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥
 ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥ ॐ वं वासन॥

॥ ५५ ॥

१ पुण्यपिन्दमण्यो नं रूपादि ॥

लागुद्धं किं पुनश्चाभुयादनासवेणाद्याविनिर्मर्कं निवलाकंसग
कृति ॥ अनुगन्धादि ॥ ॥ कृष्णकंधजायसदागिवाय स्तस्यानवोसा
रवंबु ॥ यिदुदुधाययामि ॥ यिदुदुधाययस्व ॥ यिदुकाय ॥ सय
शाभानिसर्वय ॥ ॥ लाकान्तसिय ॥ अतथाथयसनयककाय ॥ यि
नुप्रायकवन ॥ कंसकलसा निवसकअतद्वदूत ॥ मोरुद्रुयावव
य ॥ अकुरुकनिष्ठाग्रननय ॥ निगयिदुधुयुक्कुरु ॥ असिया
य वरुदले ॥ निगदलेमाल ॥ निगयिदुधयाथमयव ॥ थलेमाल
वाक्मलमोठद्रुयावकवय ॥ ॥ असिनाग्रयिदुधयविधिः ॥ ॥

अथदयकयाविनिर्मात्र ॥ ॥ आयसयितामरुचयितामरुवृद्धिपुयितामरु
धूनकाव ॥ निलक नजलेनअयसधून ॥ यिदुधुतयथानासतिलक ॥ अदमा
सनंदुयतिष्ठकां ॥ यादाधुतयतिष्ठकां ॥ वाक्म ॥ यितयादुधुयिदुधुतयतिष्ठकां
सयिदुधुतयतिष्ठकां ॥ ॥ यिदुधुतयस ॥ यादुसाधनधूनकाव ॥ अथाकवस ॥ यि
दुधुतय ॥ अदमासनंदुयतिष्ठकां ॥ यादुसाधनविधिधुंधूनकाव ॥ असाधय
यनियुद्ध ॥ अधुंधूनकाव ॥ स्वरिनंसमानकायधूनकाव ॥ अर्वाविधिधुंधूनकाव
अदधुंधूनकाव ॥ अदधुंधूनकाव ॥ ॥ यिदुधुतयविधिधुंधूनकाव ॥ अदधुंधूनकाव ॥ ॥
अथाकवस ॥ यिदुधुतयिदुधुतयसनादिविधिधुंधूनकाव ॥ अदधुंधूनकाव ॥

10

51

दाव कलमपूजाया ॥ वा द्वा धयूजासक शो पानादि द्वा द्वा नै ॥ ॥ यज
 मातति मयुनाडागीर्तय ॥ कीमारी कोय ॥ लिखनकावसमयत नो कन ॥
 ॐ लिखनकावसमयत नो कन ॥ ॥ ॥ रुचिनिह विचयावाक्य ॥ अदिशो ॥ यथा
 गोत्रस्य यथानामप्रेतत्वमुक्तं त्यर्थं सप्रमदिवसे कापालिकाय सप्रकुडवपा
 कान्तं सव्यं जनं सोपकरणं सशकानि नानोपचारकं सरपा कान्तं ससोप
 करणं व्यंजन सहितं दधि दुग्धं घृतं लवनरजनी आद्र सहितं पक्वान्तं स
 र्वोपचारकानि कापालिकाय सह मुक्तं जेत् ॥ थोते ह्यसनिह विचया ॥

गवादी निचकीर्तय ॥ यजयन्मा भिलो जया ॥ कूट कूट वगंगाय ॥ यमनाचर
 विद्वद्वा ॥ कोमिकीच नुशम यमव्यापय यमिनी ॥ रुद्रवगंग'गलुकी च
 मययुक्तमसाराथ ॥ वेन वधु वरादं श्री कीर्तयिष्युः प्रकृतय ॥ ॥ यृधि शोया
 तितीर्थेति यत्नासागनासुथ ॥ एतानि मनसा ध्याय सर्वतीर्थेन्य
 वाहनं ॥ अन्तर्यामिनाम पुताय अमो सुग्मं लोकाय स्वाहा ॥ ली
 खविद्य ३ वा ॥ ॥ कृत्वा रुद्रक कृत्वा कर्म जानता वा यो जान
 ता मृत्यु कालं वगंगाय न नयधु स्वमागतं ॥ धर्मा धर्ममायुर्क

लोहमाहसना करी दहर्द नव गं शवि दिक्काल लोका नू म म कति ॥
 तस्याह माधेकाता ३ सि स्वद हं जय नयूनः ॥ अ सो स ग म यि ला का य
 सादा ॥ अ न्निदा न ॥ • ॥ ॥ रुच निह्न विरय्या ॥ वो २ जा कि कु ३ १०
 स्व १ कु लिं धौ पा १ माले ल धौ को चे के न दं २ देव द क्षिणा दं ३ दाम चि पं दि य ता
 अ १ ध किं पु जा अ १ १ क थि ॥ ॥ दं १ द दाम कु २ च जि न उ ॥ दं ० द दाम भा
 त या न ॥ दं १ द दाम कु ३ १ २ व जि धो वि या ॥

१ मित  थन
 स्वाय नयाय

मं
 थन

	च	स	द	उ
सा	ह	अ	न	दा
	दि	यं	अ	न

मान रुचि लु थ यया दि
 थ थ ला ज रु ली ॥

२ अरु मान द कि ल रि मूरव